05-01-2021

भाग 'अ' 1.

Q. 1

A]

B] बाण भट्ट हर्ष के दरबारी कवि थे, जिन्होंने हर्षचरित की रचना की।

C]

D] भारत में संविधान सभा के निर्माण सम्बन्धी प्रस्ताव क्रिप्स मिशन सन् 1942 में भारत आया।

E]

F]

G] सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राप्त मुहर स्वास्तिक उस समय की धार्मिक भावनाओं को प्रदर्शित करते हैं।

H] 1. मैक्स निलिवा योवोरनियरे झांसी की रानि का 'स्त्री-लिंग चरित्र एवं स्वतंत्रवादी नायक' कहा है।

I] 2. वह स्वकीय था, स्वतंत्र जारल का साथ था।

J] भारत स्वतंत्रता अधिनियम 1947 द्वारा माउन्टबेटन योजना को वैधानिक रूप दिया गया। उसके अन्तर्गत भारत और पाकिस्तान दो अधिराज्यों का निर्माण करना था।

K] बालाजी बाजीराव मराठा साम्राज्य के पेशवा (प्रधानमंत्री) थे। अन्य नाम - नाना साहेब के नाम से भी जाना जाता है।

Scanned with CamScanner

L] 'तुलुगमा' एक युद्ध नीति, जिसे बाबर ने अपने 'पानीपत के प्रथम युद्ध (1526)' में प्रयोग कर विजय प्राप्त किया।

M] हैदर अली 'मैसूर' का राजा था। प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध में ब्रिटिश को पराजित किया।

N] दांडी मार्च का आरम्भ 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से हुआ तथा 6 अप्रैल 1930 को दांडी में गांधी ने नमक कानून को तोड़ा।

2 A]. किसी भी क्रांति के पूर्व 'बौद्धिक क्रांति' का होना आवश्यक माना जाता है। बौद्धिक क्रांति द्वारा क्रांतिकारियों में प्रेरणा, उत्साह, और अन्याय के प्रति आक्रोश को पैदा किया जाता है; ताकि क्रांति अपने निश्चित लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।

फ्रांसीसी क्रांति में निम्नलिखित दार्शनिकों की भूमिका रही, जैसे -

1. रूसो - रूसो द्वारा रचित 'सोशल कान्ट्रैक्ट' के विचारों ने क्रांतिकारियों में जोश भरा। उन्होंने सामाजिक असमानता के खिलाफ मजबूत विचार प्रस्तुत किए एवं रूसो ने 'प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत' का वर्णन किया और प्रसिद्ध नारा 'प्रकृति की ओर लौटो' दिया।

2. वाल्तेयर - वह फ्रांस के लिये रुसो, धर्म सुधार और क्रांति लाना था। उसके विचारों ने क्रांतिकारियों को प्रेरित किया। उनकी कृतियां ए डिप. लेटर्स आदि।

3. मान्टेस्क्यू : फ्रांसीसी क्रांति में इनकी पुस्तक 'द स्पिरिट ऑफ लॉज' थी। इन्होंने राजनीतिक विचार एवं सत्ता के विकेंद्रीकरण, शक्ति पृथक्करण, -- की बात की।

इन दार्शनिकों के अतिरिक्त मार्क्स, मोन्टी, दिदरो आदि भी फ्रांसीसी क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

C] वर्नाकुलर प्रेस अधिनियम (1878) 1857 की क्रांति के उपरान्त एक महत्वपूर्ण घटना थी। जिसने विदेशी समाचार पत्रों एवं देशी समाचार पत्रों के मध्य कटुता पैदा की। इस एक्ट को लार्ड लिटन द्वारा लाया गया। जिसका प्रमुख उद्देश्य भारतीय समाचार पत्रों के प्रकाशन तथा सम्पादन को नियंत्रित करना था।

आधार ?

कौन अखबार

वर्नाकुलर प्रेस अधिनियम के प्रावधान :

1. जिला दण्डनायकों को यह अधिकार मिला कि वे स्थानीय सरकार की आज्ञा से किसी भारतीय भाषा के समाचार-पत्र के प्रकाशक या मुद्रक को बुलाकर 'बंधपत्र' पर हस्ताक्षर करने के लिये कह सकते है।

2. दण्डनायक का निर्णय अंतिम तथा अपील रहित

3. देशी समाचार पत्रों को कार्यवाही से बचने हेतु अपने समाचार पत्र का प्रूफ़ जमा करना अनिवार्य कर दिया गया।

स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि इस एक्ट ने ब्रिटिश आलोचना के विरुद्ध भारतीय समाचार पत्रों नियंत्रित करना। इसलिये इस अधिनियम को 'मुंह बंद करने वाले अधिनियम' की संज्ञा दी जाती है।

---

2 D] भारत में मुगल कालीन साम्राज्य की स्थापना 1526 में 'बाबर' द्वारा की गई। यह साम्राज्य हुमायुं, अकबर, जहांगीर तथा शाहजहां के काल में परवान चढ़ा और औरंगजेब की नीतियां एवं स्वभाव तथा उनके बाद आने वाले अयोग्य उत्तराधिकारियों के कारण मुगल साम्राज्य का पतन हुआ। मुगल साम्राज्य के पतन में औरंगजेब की भूमिका निम्न :

1. धार्मिक स्वभाव : भारत जैसे विविध धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं वाले देश में उसने मुस्लिम धर्म के मान्यताओं के अलावा अन्य धर्मों एवं समाजों की मान्यताओं से इतर रखना था।

2. **निरंतर का अभाव** : यह अपने मंत्रियों तथा उत्तराधिकारियों में सहज विश्वास नहीं करता था। जिस कारण उसे अकेलेपन का सामना करना पड़ता था।

3. **साम्प्रदायिक प्रभाव** : - वह कट्टर सुन्नी सम्प्रदाय में विश्वास रखता था। तथा अन्य सम्प्रदायों से घृणा करता था।

4. राजपूतों, मराठों तथा बुन्देलों से सम्बन्ध का अभाव

4. धर्म और नियम जो समाज में समस्याओं को जन्म दिया।

इन सब कारणों के अतिरिक्त औरंगजेब की राजनीतिक एवं प्रशासनिक तथा धार्मिक नीतियों के असफलता के कारण मुगल साम्राज्य का पतन हुआ।

(3)

2E] पुनर्जागरण के बाद 'औद्योगिक क्रांति' एक मुख्य घटना थी जिसने प्राचीन कृषि आधारित अर्थव्यवस्था ने उद्योग आधारित अर्थव्यवस्था का स्वरूप लिया। औद्योगिक क्रांति के परिणाम निम्नलिखित है :-

औद्योगिक क्रांति परिणाम

सामाजिक परिवर्तन
1. जनसंख्या वृद्धि
2. श्रमिकों की दयनीय दशा
3. समाज में नया वर्ग भेद
   - पूंजीपति, श्रमिक, मध्यम वर्ग

आर्थिक परिवर्तन
1. कपड़ा, लोहा, कोयला उत्पादन में वृद्धि
2. कुटीर उद्योगों का
3. बड़े बड़े औद्योगिक नगरों का निर्माण

सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवर्तन
1. व्यापक मताधिकार का विकास
2. समाजवाद का विकास
3. एकल परिवार की वृद्धि

इन परिवर्तनों के अतिरिक्त व्यापार, कृषि संपदा तथा नये उपनिवेशों की नियति संबंधी परिवर्तन हुये, जिसने भारतीय आधुनिक जीवन को सरल, सहज एवं व्यापक किया।

---

2 F] ब्रिटिश नीतियों एवं कार्यों के प्रति कृषकों, जमींदारों, आदिवासियों, राजाओं एवं सैनिकों में पनपा असंतोष 1857 की क्रांति का कारण बना।

किन्तु असंगठित एवं सुनियोजन के अभाव में क्रांति अपने वांछित लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकी।

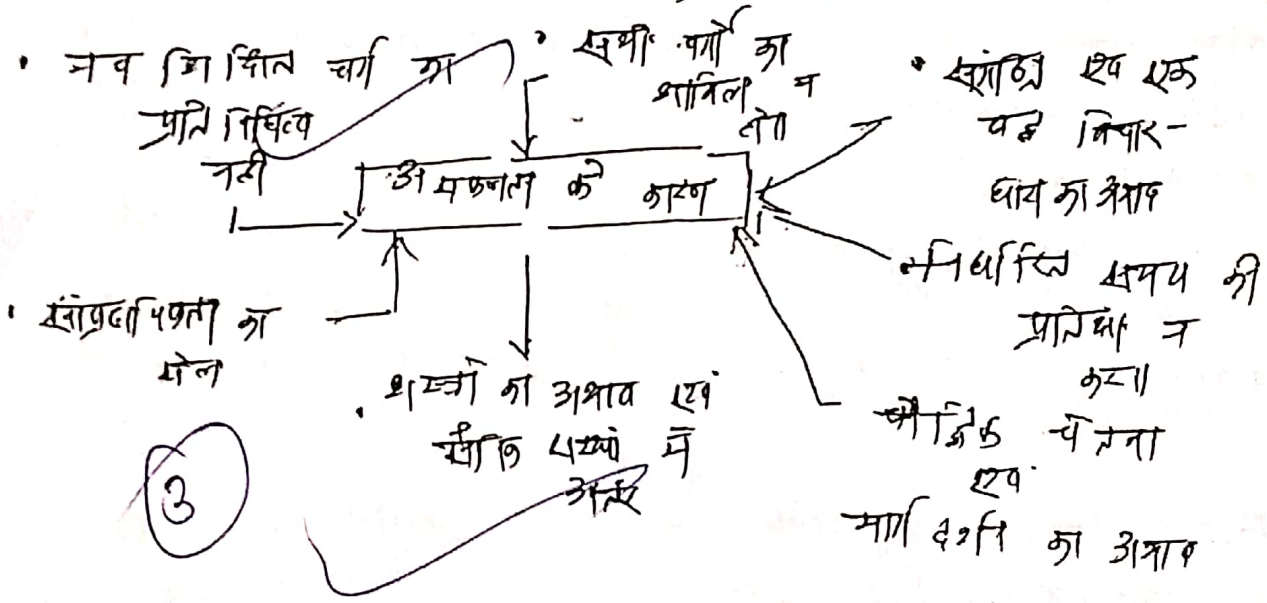

क्रांति की असफलता के प्रमुख कारण

इन प्रमुख कारणों के अतिरिक्त उसकी व्यापक विस्तार न होना, राजा महाराजाओं का तटस्थ रहना तथा नवीन युद्ध कौशल एवं संचार व्यवस्था के अभाव में 1857 की क्रांति अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकी। किंतु इसने भारतीय समाज एवं तत्कालीन ब्रिटिश शासन में व्यापक परिवर्तन का माध्यम बनी।

2 ग] गया सुद्दीन तुगलक की मृत्यु उपरांत उसका ज्येष्ठ पुत्र 'जौना खां' ने मुहम्मद बिन तुगलक की उपाधि धारण की। जिया उद्दीन बरनी द्वारा लिखित 'तारीख-ए-फिरोजशाही' एवं मोरक्को (अफ्रीका) निवासी 'इब्न बतूता' के यात्रा वृत्तांत एवं उसकी पुस्तक 'किताब-उल-रेहला' से मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल संबंधी जानकारी प्राप्त होती है।

परोपकारी कार्य

Time period

कुशल नीतियों के निर्माण में रहे असफल क्रियान्वयन के कारण मध्य कालीन इतिहास में चर्चा का केन्द्र रहा। उदाहरण स्वरूप जहां ही उसने दोआब में कर वृद्धि कर कुछ तक किया, उसी समय 'अकाल' पड़ गया तथा 'आपदा' के कारण असंतोष फैल गया। वहीं व्यापारिक लेनदेन में सुधार हेतु सांकेतिक मुद्रा चलाया। किन्तु इसकी कुशल निगरानी प्रणाली के अभाव में असफलता प्राप्त हुई।

2

इसके अलावा राजधानी परिवर्तन (देवगिरि) दूर स्थिति के अभाव में उसको शासन चलाना पड़ा। इतिहास-कारों ने उसे तुगलक वंश का सबसे विद्वान मूर्ख कहा।

2 घ] भारतीय सामाजिक सुधार के आंदोलन में राजा राम-मोहन राय का अद्वितीय योगदान रहा है। उनके इन योगदानों के कारण इतिहासकारों ने उन्हें 'भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत' कहा।

उनके द्वारा समाज सुधार हेतु अनेक संस्थाएं एवं पुस्तकों की रचना की गई। उनकी संस्थाओं में 'ब्रह्म समाज' एक महत्वपूर्ण संस्था थी। 'ब्रह्म समाज' में निम्न विचार दर्शन की झलक मिलती है:-

1. मूर्ति पूजा एवं पाखंडवाद का अंत

2. सती प्रथा का अंत करना।
3. नवीन विचार धारा एवं 'वैज्ञानिक भाव' को बढ़ावा।
4. समाचार पत्रों, पुस्तकों का प्रकाशन करना - यथा मिरात-उल अखबार, संवाद कौमुदी आदि।
5. ब्रह्मसमाज की शिक्षाओं एवं मान्यताओं का प्रचार प्रसार।
6. विभिन्न सरकार की सहायता से समाज सुधार संबंधी नियमों एवं कानूनों को लागू करना।

स्पष्टतः तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों के विरुद्ध 'ब्रह्म समाज' ने मजबूत समर्थ कर देश की सामाजिक चेतना एवं राजनीतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(B)

2 b). मुगल साम्राज्य के विस्तार के क्रम में दूसरे बादशाह पर - बाबर का पुत्र 'हुमायूं' ने सत्ता संभाली। किंतु - अपनी दूरदर्शिता एवं शासन की कुशल नीतियों के अभाव में वह सत्ता में लंबे समय तक नहीं रहा। इसकी इन असफलता रहा। हुमायूं की असफलता के निम्नलिखित कारण है -

1. दूरदर्शिता का अभाव :- 1532 ई. के चुनार के अपने प्रथम युद्ध में उसने 4 माह तक किले का घेराव किया। जिसके बाद शेरशाह ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। इस समयावधि में किले में उसने किलेबंदी 1540 तक की।
2. कालिंजर का घेरा - कालिंजर के किले का घेराव कर उसने अत्यधिक समय का व्यय किया। तथा अपनी प्रशासन की स्थापना करने में असफल रहा।
3. अफगानों का समर्थन न प्राप्त करना, अफगानी सामंतों का विश्वास हासिल करने में असफल।

4. चौसा एवं बिलग्राम / कन्नौज का युद्ध : इस युद्ध ने भारत में एक बार मुगल सत्ता को मिटा दिया। परिणाम स्वरूप 'सूर वंश' की स्थापना हुई।

5. 1540 - 1555 ई. तक निर्वासित जीवन : हुमायूं को अपनी जीवन रक्षा एवं शासन सुरक्षा का समर्थन प्राप्त करने के लिये निर्वासन का समय लेना पड़ा।

6. सरहिन्द का युद्ध : 1555 ई. के सरहिन्द के युद्ध ने हुमायूं को उसका खोया राज्य पुनः दिलाया। किंतु 1556 में पुस्तकालय की सीढ़ियों से लड़खड़ाकर गिरने से उसकी मौत हो गई।

स्पष्टतः व्यापक प्रशासनिक एवं राजनैतिक कार्य कुशलता के अभाव में हुमायूं का शासन लड़खड़ाता रहा। इसी कारण इतिहासकारों ने इसे मुगल साम्राज्य का लड़खड़ाता शासक कहा।

सामान्य विश्लेषण
अपव्यय
दूरदर्शिता अभाव

2½

Q. 3
3 A] मध्य काल से आधुनिक काल की विकास यात्रा में इंग्लैण्ड में हुई 'रक्तहीन' गौरव क्रांति' का महत्वपूर्ण स्थान है। इसने तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन किये। परिणाम स्वरूप नवीन तर्क एवं वैज्ञानिक बात को बढ़ावा दिया, धार्मिक एवं शिक्षित मान्यताओं को तर्क एवं बुद्धिमत्ता की कसौटी पर परखा गया, तथा स्वाभाविक अपमानों की बजाय स्वाभाविक प्रसन्नता एवं अधिकार की प्रथा तथा निरंकुश शासकों के विरुद्ध संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गौरव पूर्ण क्रांति के पूर्व इंग्लैंड की स्थिति पर दृष्टि पात करने से निम्न स्थितियां प्रकट होती है।

क्रांति से पूर्व की स्थिति:

1. **राजनैतिक क्षेत्र** :- इंग्लैण्ड में स्टुअर्ट वंश का निरंकुश शासन था। 1603 - 1689) ई. तक स्टुअर्ट वंश का शासन रहा। जिस में पूर्ण संसदीय नियंत्रण सम्राट के हाथों में निहित थी।

2. **आर्थिक क्षेत्र में** क्रांति से पूर्व इंग्लैंड की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित थी। कृषिगत भूमि छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त थी। किसानों से कर का भार अत्यधिक, तथा सामंती व्यवस्था का अन्याय, शोषण का शिकार किसान एवं मजदूर वर्ग था।

3. **धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र** :- इंग्लैंड में इसाई धर्म प्रतिष्ठित था। राजा अपने को कैथोलिक शाखा का प्रतिनिधि था को दैवीय कानून का समर्थक तथा ईश्वर का प्रतिनिधि था

जेम्स द्वितीय के निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी शासन प्रणाली ने जनता में असंतोष एवं आक्रोश का कारण बना।

गौरव पूर्ण क्रांति के निम्न लिखित कारण थे -

क्रांति के कारण

राजनीतिक	धार्मिक	बौद्धिक व तात्कालिक कारण।
• निरंकुश शासन प्रणाली एवं दैवीय कानून	• चर्चों प्रबंध में पादरियों का प्रभुत्व	• पुनर्जागरण काल का प्रभाव
• संसदीय शक्ति पर पूर्ण नियंत्रण	• कैथोलिक धर्म का प्रोटेस्टैंट पर प्रभुत्व	• नवीन वैज्ञानिक, तर्क एवं चिंतन का उदय
• मनमानी व स्वार्थी कानून	• अत्याचार एवं रूढ़िवादिता	• शिक्षा का अभाव

5

क्रांति का तात्कालिक कारण: गौरव पूर्ण क्रांति का तात्कालिक कारण जेम्स द्वितीय के पुत्र (फिलिप्स) का जन्म होना। क्योंकि जेम्स द्वितीय की प्रोटेस्टैंट (मारिया ल्यूथर किंग) की विचारधारा वाले लोग से भय था कि कहीं पुत्र = कैथोलिक धर्म अपनाकर राज करे। इस कारण प्रोटेस्टेंट लोगों की बातें ध्यान में न दे कर लोगों के साथ क्रूर व्यवहार किया। परिणाम स्वरूप राजा ने लोगों को भाग जाना पड़ा। इस क्रांति के उपरांत संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना हुई।

निष्कर्ष: इतिहासकार ट्रेवेलियन ने इसे बिना रक्तपात क्रांति की क्रांति कहा।

3 D] क्रिप्स मिशन की विफलता का परिणाम, तथा तत्कालीन द्वितीय विश्व युद्ध की परिस्थितियाँ एवं भारत पर जापानी आक्रमण का खतरा एवं अंग्रेजी शासन ने भारत छोड़ो आंदोलन का सूत्रपात किया।

जिसमें गांधी जी के आह्वान पर जनता एवं शासन प्रशासन में कार्यरत भारतीयों का व्यापक समर्थन मिला। कई नेताओं ने आंदोलन में भाग लिया। विद्रोह एवं क्रान्ति एवं गतिविधि चला। फलस्वरूप कई स्थानों में समानांतर सरकारें बनी तथा गिरफ्तारी के उपरांत उसके आंदोलन भूमिगत भी चलता रहा। इस आंदोलन में महिलाओं ने व्यापक भागीदारी दिखाई।

भारत छोड़ो आंदोलन के प्रमुख घटनाक्रम निम्न हैं -

1. 1. भारत छोड़ो प्रस्ताव की मंजूरी :- कांग्रेस के जुलाई 1942 के वर्धा अधिवेशन में प्रस्ताव को मंजूरी किया। इस प्रस्ताव को कांग्रेस कार्य समिति ने स्वीकार किया।

2. बम्बई के ग्वालिया टैंक :- में 8 अगस्त 1942 को महात्मा गांधी द्वारा समस्त नागरिकों एवं शासन प्रशासन में कार्यरत भारतीयों को आंदोलन में भाग लेने तथा साथ देने का आह्वान किया।

3. ऑपरेशन जीरो आवर :- ऑपरेशन जीरो आवर चलाकर ब्रिटिश सरकार ने आंदोलन के प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया।

गांधी जी, सरोजनी नायडू को आगा खां पैलेस में रखा गया। अन्य नेताओं को अलग-2 स्थानों पर रखा गया।

4. भूमिगत आंदोलन - बड़े नेताओं की गिरफ्तारी के बाद जय प्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया आदि ने भूमिगत रहकर आंदोलन चलाया।

5. आजाद रेडियो का संचालन : आंदोलन को गति एवं निरंतरता प्रदान करने के लिये अन्य अंग्रेजों व अन्य महत्वपूर्ण अन्य सूचनाओं के आदान प्रदान के लिये आकाश रेडियो चलाया।

6. समानान्तर सरकार का गठन - भारत छोड़ो आंदोलन इतना उग्र एवं प्रभावी था कि बलिया में चित्तू पाण्डेय के नेतृत्व में समानान्तर सरकार का निर्माण हुआ। इसी तरह बिहार में भी समानान्तर सरकार का गठन हुआ।

7. गांधी जी का उपवास : अंग्रेजों ने अहिंसा के पुजारी को 'अहिंसा' से हिंसात्मक आंदोलन करने का आरोप लगाया तो गांधी जी ने कहा यह हिंसा ब्रिटिशों द्वारा की गई हिंसात्मक कार्यवाही का परिणाम है।
इस मिथ्या आरोप के चलते गांधी ने 21 दिन का उपवास रखा।

8. नौसेना का विद्रोह - बम्बई के तलवार जहाज में भी भारतीय नौसैनिकों ने विद्रोह कर दिया था।

निष्कर्ष: भारत छोड़ो आंदोलन ने ब्रिटिश शासन व्यवस्था की नींव हिलाकर रख दिया। परिणाम स्वरूप ब्रिटिशों ने भारत को आजादी देने का प्रयास आरम्भ किया।